



प्राकृतिक खेती

मोती लाल मीणा*, मधु सूदन कुण्डु**,
अंजनी कुमार*** और अमरेन्द्र कुमार****

प्राकृतिक खेती का मुख्य आधार देसी गाय है। यह कृषि की प्राचीन पद्धति है। यह पद्धति भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है। इस पद्धति में रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। प्रकृति में पाए जाने वाले तत्वों को खेती में कीटनाशक के रूप में काम में लिया जाता है। प्राकृतिक खेती में कीटनाशकों के रूप में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, फसल अवशेष और प्रकृति में उपलब्ध खनिज जैसे-रॉक फॉस्फेट, जिप्सम आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिये जाते हैं।

प्राकृतिक खेती के तरीकों की बात करें तो इसके महत्वपूर्ण स्तंभ जीवामृत, बीजामृत, आच्छादन और व्हापासा हैं।

जीरो बजट खेती के मूल सिद्धांत जीवामृत

यह घर में बना एक किण्वित सूक्ष्मजीवाण्विक संवर्धन है। यह फसल को आवश्यक तत्व प्रदान करता है। इसके अलावा मृदा में केंचुओं की गतिविधि को बढ़ाने के साथ-साथ यह माइक्रोबियल क्रियाकलापों की वृद्धि के लिए एक उत्प्रेरक एजेंट के रूप में भी कार्य करता है।

उपयोग

जीवामृत को महीने में दो बार या एक

*वरिष्ठ वैज्ञानिक सह अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, तुर्की, मुजफ्फरपुर-844127 (बिहार); **निदेशक, प्रसार शिक्षा, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा-848125 (बिहार); ***निदेशक, एवं ****प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पटना-801506 (बिहार)

बार उपलब्धता के अनुसार, 200 लीटर प्रति एकड़ की दर से सिंचाई के पानी के साथ देना चाहिए। फलों के वृक्षों के पास दोपहर 12 बजे जो छाया पड़ती है, उस छाया के पास प्रति वृक्ष 2 से 5 लीटर जीवामृत को भूमि पर महीने में एक या दो बार गोलाकार रूप में डालना चाहिए। जीवामृत डालते समय भूमि में नमी का होना आवश्यक है।

पहला छिड़काव: बीज बुआई के 21 दिनों बाद प्रति एकड़ 100 लीटर पानी और 50 लीटर कपड़े से छाना हुआ जीवामृत मिलाकर छिड़काव करना उपयोगी है।

दूसरा छिड़काव: पहले छिड़काव के 21 दिनों बाद प्रति एकड़ 150 लीटर पानी और 10 लीटर छाना हुआ जीवामृत मिलाकर छिड़काव करें।

तीसरा छिड़काव: दूसरे छिड़काव के 21 दिनों बाद प्रति एकड़ 200 लीटर पानी और 20 लीटर जीवामृत मिलाकर छिड़काव ठीक रहेगा।

प्राकृतिक खेती का महत्व

- मृदा की उर्वराशक्ति बनाये रखना
- पर्यावरण सुरक्षा में हितकारी
- मानव स्वास्थ्य में लाभदायक
- उच्च गुणवत्ता वाले फसल उत्पाद विकसित करने में सहायक
- खेती में लागत कम करने में अधिक लाभकारी
- स्वस्थ खाद्यान्न उत्पादन में फायदेमंद
- मृदा में लाभदायक जीवाणुओं की वृद्धि में उपयोगी

चौथा और आखिरी छिड़काव: जब दाने दूध की अवस्था में या फल बाल्यावस्था में हों, उस समय प्रति एकड़ 200 लीटर पानी और 5 लीटर खट्टी छाछ या 2 लीटर नारियल का पानी मिलाकर छिड़काव कर सकते हैं।

बीजामृत

इसका प्रयोग बुआई से पहले बीज, अंकुरित या किसी भी रोपण सामग्री के उपचार के लिए किया जाता है। यह नई जड़ों को फफूंद से बचाने के साथ-साथ मृदाजनित और बीजजनित रोगों से भी बचाता है।

इन सभी पदार्थों को पानी में घोलकर 24 घंटे तक रखें। दिन में दो बार लकड़ी से इसे हिलाना जरूरी है। इसके बाद बीजों के ऊपर बीजामृत डालकर उन्हें शुद्ध करना चाहिए। बाद में छाया में सुखाकर फिर बुआई करनी चाहिए। बीजामृत द्वारा शुद्ध हुए बीज जल्दी और अधिक मात्रा में उगते हैं। इनकी जड़ें तेजी से बढ़ती हैं।

आच्छादन (मल्लिचंग)

इस प्रक्रिया में मिट्टी को सूखी फसल के अवशेषों या गिरी हुई पत्तियों की एक परत के साथ आच्छादित किया जाता है। इस प्रकार मृदा की नमी को संरक्षित किया जा सकता है। तापमान को 25-32 डिग्री सेल्सियस पर जड़ों के आसपास रखा जाता है, ताकि सूक्ष्मजीव ठीक से काम कर सकें।

वेपसा

यह पौधों को आवश्यक नमी-वायु संतुलन बनाए रखने के लिए पानी और हवा प्रदान करता है। इसलिए, जीरो बजट खेती को अपनाने से टिकाऊ खेती के अच्छे अवसर प्राप्त होंगे।

फसल सुरक्षा

नीमास्त्र

रस चूसने वाले कीट एवं छोटी सूंडी इल्लियों के नियंत्रण हेतु।



प्राकृतिक खेती के अवयव

सारणी 1. जीवामृत का उत्पादन

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1	गाय का गोबर	10 कि.ग्रा.
2	देसी गाय का गौमूत्र	10 लीटर
3	गुड़	1-2 कि.ग्रा.
4	बेसन/दलहन का आटा	1-2 कि.ग्रा.
5	बरगद के वृक्ष के नीचे की मिट्टी	1 कि.ग्रा.
6	साफ पानी	180 लीटर

सारणी 2. बीजामृत के लिए सामग्री

देसी गाय का गोबर	5 कि.ग्रा.
गौमूत्र	5 लीटर
चूना या कली	250 ग्राम
पानी	20 लीटर
खेत की मिट्टी	200 ग्राम

विधि: पांच कि.ग्रा. नीम की हरी पत्तियां या नीम के पांच कि.ग्रा. सूखे फल लें। पत्तियों या फलों को कूटकर रखें। 100 लीटर पानी में कुटे हुए नीम या फल का

सारणी 3. नीमास्त्र से रस चूसने वाले कीट और छोटी सुंडियों का नियंत्रण

क्र.सं.	आवश्यक सामग्री	मात्रा
1	नीम के पत्ते व फल पीसकर	5 कि.ग्रा.
2	गौमूत्र	5 लीटर
3	गोबर	1 कि.ग्रा.
4	पानी	100 लीटर

पाउडर डालें। उसमें 5 लीटर गौमूत्र डालें और एक कि.ग्रा. देसी गाय का गोबर मिला लें। लकड़ी से इसे घोलें और ढककर 48 घंटों तक रखें। दिन में तीन बार इस घोल को घुमायें और 48 घंटों के बाद इस घोल को कपड़े से छान लें। अब इसका फसल पर छिड़काव करें।

ब्रह्मास्त्र

कीटों, बड़ी सुंडियों व इल्लियों के लिए।

विधि: सबसे पहले 10 लीटर गौमूत्र

प्राकृतिक कृषि के कुछ विशेष पहलू

- यह पद्धति प्रकृति, विज्ञान, आध्यात्म एवं अहिंसा पर आधारित शाश्वत कृषि पर आधारित है।
- इस पद्धति में केवल 10 प्रतिशत पानी एवं 10 प्रतिशत बिजली की आवश्यकता है। अर्थात् 90 प्रतिशत पानी व 90 प्रतिशत बिजली की बचत होती है।
- प्राकृतिक खेती में फसल उत्पादन, रासायनिक कृषि पद्धति एवं जैविक कृषि पद्धति से अधिक होता है।
- फसल उत्पादन विष-मुक्त, उच्च गुणवत्तायुक्त, पौष्टिक व स्वादिष्ट। इन गुणों के कारण उपभोक्ताओं द्वारा इनकी मांग अधिक होने से मूल्य भी अच्छा मिलता है।
- कम लागत कृषि का नारा है- 'गांव का पैसा गांव में, शहर का पैसा गांव में'। इन सभी पहलुओं पर विचार करते हुए प्रत्येक किसान को कम लागत आधारित प्राकृतिक खेती को स्वीकार करना चाहिए।

लें। इसमें 3 कि.ग्रा. नीम के पत्ते पीसकर डालें। उसमें 2 कि.ग्रा. करंज के पत्ते डालें। करंज के पत्ते न मिलें, तो 3 कि.ग्रा. की जगह 5 कि.ग्रा. नीम के पत्ते डालें, फिर उसमें 2 कि.ग्रा. सीताफल के पत्ते पीसकर डालें। सफेद धतूरे के 2 कि.ग्रा. पत्ते भी पीसकर इसमें डालें। अब इस सारे मिश्रण को गौमूत्र में घोलें और ढककर उबालें। 3-4 उबाल आने के बाद उसे आग से नीचे उतारकर 48 घंटों तक इसे ठंडा होने दें। बाद में उसे कपड़े से छानकर किसी बड़े बर्तन में भरकर रख लें। 100 लीटर पानी में 2-2.5 लीटर मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।

दशपर्णी अर्क दवा

एक ड्रम या मिट्टी के बर्तन में 200 लीटर पानी लें। इसमें 10 लीटर गौमूत्र एवं 2 कि.ग्रा. देसी गाय का गोबर डालें और अच्छी तरह से घोलें। यह बहुत ही आसान और असरदार दवा है। किसी भी फसल या फलदार वृक्षों पर कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव करने के लिए घर बैठे कम लागत से इस दवा बना सकते हैं।

विधि: उपरोक्त पदार्थों को एक ड्रम

खेती • जनवरी 2024 • 32

सारणी 4. दशपर्णी अर्क दवा से रसचूसक कीटों और सभी इल्लियों का नियंत्रण

क्र.सं.	अवयव	मात्रा
1	पानी	200 लीटर
2	देसी गाय का गौमूत्र	10 लीटर
3	देसी गाय का गोबर	2 कि.ग्रा.
4	हल्दी पाउडर	500 ग्राम
5	अदरक की चटनी	500 ग्राम
6	हींग पाउडर	10 ग्राम
7	खाने का तम्बाकू पाउडर	1 कि.ग्रा.
8	तीखी हरी मिर्च की चटनी	1 कि.ग्रा.
9	लहसुन की चटनी	500 ग्राम
10	नीम के पेड़ की छोटी-छोटी टहनियां	2 कि.ग्रा.
11	करंज के पत्ते	2 कि.ग्रा.
12	अरण्डी के पत्ते	2 कि.ग्रा.
14	अदरक के पत्ते	2 कि.ग्रा.
15	बबूल के पत्ते	2 कि.ग्रा.
16	सोंठ पाउडर	200 ग्राम

में डालकर 48 घंटे तक रखें तथा दिन में 3 बार लकड़ी के डंडे से घोलें, फिर कपड़े से छानकर इसका छिड़काव करें।

घनजीवामृत

यह एक अत्यंत प्रभावी जीवाणुयुक्त सूखी जैविक खाद है। इसे गाय के गोबर में



घनजीवामृत

गौमूत्र, गुड़, बेसन उपजाऊ मिट्टी के साथ मिलाकर बनाया जाता है।

सारणी 5. घनजीवामृत के लिए आवश्यक सामग्री

सामग्री	मात्रा
देसी गाय का गोबर	100 कि.ग्रा.
गौमूत्र	5 लीटर
देसी गुड़	2 कि.ग्रा.
बेसन	2 कि.ग्रा.
सजीव मिट्टी	1 कि.ग्रा.

उपरोक्त सामग्रियों को उपयुक्त अनुपात में मिलाकर घनजीवामृत बनाएं। कम लागत वाली इस जैविक खाद की प्राकृतिक खेती में अहम भूमिका है।